❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
145वें आर्यसमाज स्थापना दिवस,
नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2076 की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 42, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 मार्च, 2019 से रविवार 31 मार्च, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य ही हैं भारत के मूल निवासी

भूमि भारत ने अपने इतिहास में समय-समय पर कई आक्रमण देखे हैं इनमें शक, हूण और मंगोल आए इसके बाद मुगल, पुर्तगाली और अंग्रेज भी आये किन्तु भारत भूमि को न मिटा सके। हलाँकि वह आक्रमण तलवार, बंदूक, तोप से थे पर आज एक नये तरीके का वैचारिक आक्रमण भारत भूमि पर हो रहा है।

कथित मूलनिवासी नाम का संगठन चलाने वाले ये आक्रमणकारी हर रोज कुछ यूँ कहकर आक्रमण कर रहे है कि आर्य बाहरी है और बाकी सब जिनमें बौद्ध हैं, मुस्लिम हैं, सिख और ईसाई भी हैं वे दलितों को भी इसमें जोड़कर कह रहे है कि यह सब मूलनिवासी है।

इनके पास कुछ लेखकों की पुस्तक के संदर्भ है उन सन्दर्भों को ये लोग सत्य मानकर देश में एक नया अलगाव पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं। इनके अनुसार सम्राट अशोक मूल निवासी था क्योंकि उसने बौद्ध दर्शन अपना लिया था पर उसके दादा चंदगुप्त मौर्य और पिता बिन्दुसार बाहरी थे क्योंकि वह स्वयं को आर्य कहते थे।

आखिर ये आर्य कौन थे? क्या आर्य विदेशी थे अथवा क्या आर्य भारतीय थे?

.... "यह सोचना गलत है कि आर्य आक्रमणकारियों ने शूद्रों पर विजय प्राप्त की। पहली बात तो ये है कि इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि आर्य भारत के बाहर से आये और उन्होंने यहां के मूलनिवासियों पर आक्रमण किया। इस बात की पुष्टि के कई प्रमाण है कि आर्य भारत के मूलनिवासी थे।".......

.........."शूद्र को आर्य स्वीकार किया था और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी उनको आर्य कहा गया है और शूद्र आर्यों के अभिन्न, जन्मजात और सम्मानित सदस्य थे।" ...... (डॉ. अम्बेडकर कृत - 'संपूर्ण वांग्मय' खंड 7 पृष्ठ 321-322)

अगर आर्य विदेशी थे तो क्या आज हम सभी विदेशी हैं? देश के पदक जीतने वाले खिलाड़ी हो या जीवन रक्षा का कार्य कर रहे डॉक्टर और इसरो में देश के लिए वैज्ञानिक उपलब्धि हासिल करने वाले, खेत में काम करता किसान और मजदूर या फिर क्या देश की सीमा पर लड़ रहा जवान भी क्या सभी विदेशी है? और मूलनिवासी मंच बनाकर भाषण देने वाले और ईसाई तथा मुस्लिम भारतीय है?

क्या वामपंथियों और यूरोपीय लोगों के द्वारा किताबों में दी गई जानकारी सही है? या फिर भारत की एकता की शक्ति को बाँटने के लिए मनघडंत कथा का अविष्कार किया है? अक्सर मूलनिवासी मंच के नाम से रोटी तोड़ने वाले यह लोग बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर जी को अपना आदर्श तो बताते है पर बाबा साहेब की लिखी बात परहीं है। इन्हें सिर्फ विश्वास है तो यूरोप के इतिहासकारों पर।

आर्य विदेशी थे? - इस पर बाबा साहेब उनकी लिखी पुस्तक ही देखें तो वह कहते हैं -

इसका पहला प्रमाण इनकी लिखी पुस्तक अंबेडकर संपूर्ण वांग्मय खंड 7 पेज नं 321- पर वह लिखते है कि "यह सोचना गलत है कि आर्य आक्रमणकारियों ने शूद्रों पर विजय प्राप्त की। पहली बात तो ये है कि इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि आर्य भारत के बाहर से आये और

- शेष पृष्ठ 3 पर

डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं स्वामी सुमेधानन्द जी लोकसभा चुनाव में पुन: भाजपा की ओर से प्रत्याशी

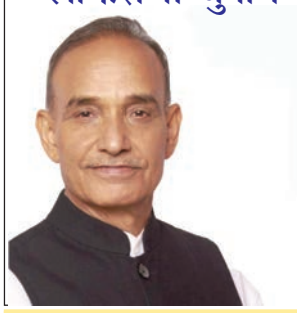

आर्यजगत की
ओर से अग्रिम
शुभकामनाएं

समस्त आर्य संस्थानों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी

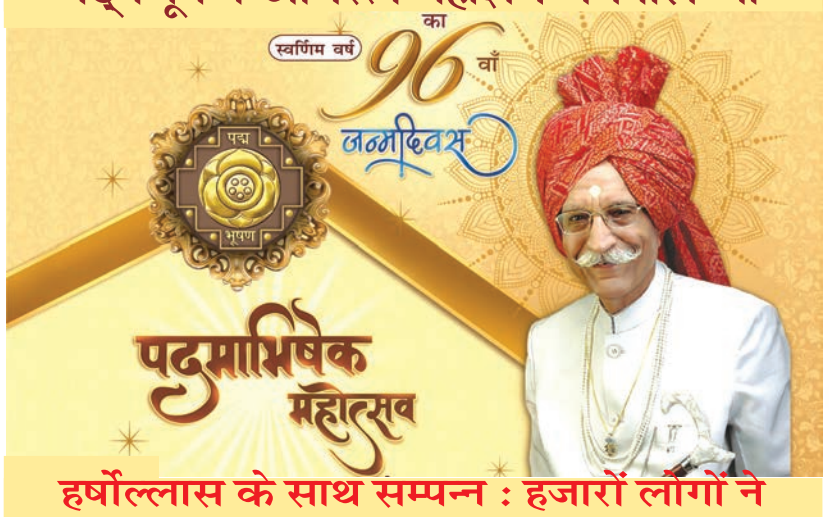

हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न : हजारों लोगों ने तालकटोरा स्टेडियम में पहुंचकर दी शुभकानाएं

विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी आगामी अंकों में

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दिल्ली की सभी आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)

के तत्त्वावधान में

नव सम्वत्सर 2076 की पूर्व संध्या के अवसर पर

145 वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

चैत्र अमावस्या विक्रमी सम्वत् 2075, तद्नुसार

शनिवार, 6 अप्रैल, 2019

स्थान - कमानी ऑडिटोरियम, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली-110001

कार्यक्रम

यज्ञ .... प्रात: 8.30
दीप प्रज्वलन .... प्रात: 9.30
सार्वजनिक सभा .... प्रात: 10.00 बजे से 1.00 बजे तक

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।

' एक रूपीय यज्ञ ' की प्रस्तुति में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले याज्ञिकों को सम्मानित किया जायेगा।

शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण

परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पहुँच कर कार्यक्रम को सफल बनायें

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र कुमार रैली	सतीश चड्डा	अरुण प्रकाश वर्मा
प्रधान	व. उप प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

वेद-स्वाध्याय

अधर्म का समूल नाश

असद् भूम्याः समभवत्तद् द्यामेति महद् व्यचः।
तद् वै ततो विधूपायत् प्रत्यक् कर्त्तारमृच्छतु।। - अथर्व० 4/19/6
ऋषिः **शुक्रः**।। देवता - **अपामार्गो वनस्पतिः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **असत्** = पाप, अधर्म **भूम्याः** = भूमि से **समभवत्** = उत्पन्न होता है और **तत्** = वह **महत् व्यचः** = बड़े भारी रूप में, अन्तरिक्ष में फैलकर **द्याम्** = द्युलोक तक **एति** = चढ़ जाता है, किन्तु **ततः** = वहाँ से, उतना बढ़कर भी, **तत्** = वह **वै** = निःसन्देह **विधूपायत्** = कर्त्ता को सन्ताप देता हुआ **प्रत्यक्** = उसके प्रति उलटा लौटकर **कर्त्तारम्** = उस कर्त्ता (पापकर्त्ता) पर ही **ऋच्छतु** = आ पड़ता है।

विनय - क्या तुम समझते हो कि संसार में 'असत्' की, पाप की ही विजय हो रही है? सच यह है कि प्रभु अपने इस संसार में बेशक कुछ देर के लिए पाप को बढ़ने, पकने देते हैं, परन्तु समय आने पर उसका विनाश तो अवश्यंभावी होता है। बुराई का वृक्ष बेशक खूब फूलता-फलता है, पर वह फिर जड़सहित उखड़ जाता है। भूमि से उठकर पाप कभी-कभी सारे अन्तरिक्ष में फैल जाता है और इतना बढ़ता है कि वह द्युलोक के प्रकाश को भी ढक लेता है। तब मनुष्य हा-हाकार मचाने लगते हैं, पर अगले ही क्षण वह छिन्न-भिन्न होने लगता है और लौटता हुआ अपने उठानेवाले के लिए दुःख की प्रितक्रिया लाकर सब-का-सब वहीं विलीन हो जाता है। सब अधर्म भूमि से उठता है; अन्धकार-अज्ञान तथा स्थूलता से उत्पन्न होता है। वह अपनी स्थूलशक्ति, पशुशक्ति को बढ़ाता हुआ सब ओर फैलता है। अपने इस स्थूल बल द्वारा वह पाप के विरुद्ध उभरनेवाले सब लोगों को दबा देता है। उसके इस दामक स्वभाव के कारण धीरे-धीरे संसार-भर में सर्वत्र उसकी ही दुन्दुभि बजने लगती है, उसी का सिक्का चलने लगता है। संसार के बड़े-बड़े दिव्य पुरुषों का, बड़े ईश्वरपरायण महात्माओं का दिव्य तेज भी उसके अन्धकार के सामने ढक-सा जाता है। तब सब भयभीत साधारण लोग बिना चूँ-चिराँ किये उसके अँधेर-राज्य को चलाते जाने में ही अपना हित व स्वार्थ देखते हैं, यद्यपि उस अधेर में वे बड़े बेचैन होते जाते और उनकी वह घबराहट बढ़ती ही जाती है। उस समय ईश्वरीय नियम की अटलता को देखनेवाले विरले ही होते हैं जो घबराते नहीं हैं, जो प्रसन्न होते हैं कि पाप जितना अधिक-से-अधिक बढ़ सकता है, वह बढ़ चुका है और अब उसके विनाशकाल का अन्त होनेवाला है। उस ऊँचाई से, अधर्म के खोखले आधार पर खड़ा किया वह सब पाप का ठाठ तो गिरता ही है, अपने बोझ से स्वयमेव गिरता ही है, साथ ही अपने कर्त्ता को, अपने खड़े करनेवाले को भी सन्ताप पहुँचाता हुआ गिरता है। वह लौटकर उसी पर गिरता है और उसको साथ लेकर भूमिसात् हो जाता है।

हे मनुष्यो! इस संसार में विजय तो सत् की, पुण्य की ही हो रही है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

इधर लव जिहाद उधर सीधा जिहाद

भले धर्म की यात्रा दिल से शुरू होकर लोककल्याण करते हुए भगवान के पास तक जाती हो परन्तु देखा जाए तो पाकिस्तान में इस्लाम मजहब की यात्रा अपनी संख्या बढ़ाने से लेकर धर्मांतरण तक जाती है। कथन को बल देती यह खबर किसी विस्फोट से कम नहीं है कि पाकिस्तान में दो नाबालिग हिन्दू लड़कियों का पहले अपहरण किया गया और फिर इसके बाद उनका जबरन इस्लाम में धर्म परिवर्तन कराया गया। सिंध प्रांत के घोटकी जिले के दहारकी गाँव से होली के दिन दो सगी बहनों के हुए अपहरण और जबरन धर्म परिवर्तन के विरोध में यूँ तो पाकिस्तान में हिंदू समुदाय ने धरना प्रदर्शन किया लेकिन होना क्या है? वही ढाक के तीन पात। बहुत कम संख्या में बचे पाकिस्तानी हिन्दू समुदाय को एक बार फिर आश्वासन दे दिया जायेगा और हमेशा की तरह यह मामला भी शांत कर दिया जायेगा।

दोंनों सगी बहनें रीना 14 वर्ष की और दूसरी रवीना 16 वर्ष की है उनका पिता खुद को थप्पड़ मारते हुए यह मांग कर रहा है कि या तो मेरी बेटियों को सुरक्षित वापस ला दो या मुझे गोली मार दो। असल में यह ये थप्पड़ रीना और रवीना का पिता अपने मुंह पर नहीं बल्कि भारत में बैठे उन कथित धर्मनिरपेक्ष नेताओं मुंह पर मार रहा है जो यहाँ जरा-सी घटना पर हिन्दू को कोसते देखे जाते हैं।

हालाँकि इस जबरन धर्मान्तरण पर सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज माकण्डेय काटजू ने जरुर ट्वीट कर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान से पूछा है आपका नया पाकिस्तान कहां है? क्योंकि पुराने पाकिस्तान में तो यह सब वर्षों से जारी था ही।

कहने को तो 2016 में सिंध विधानसभा ने खासकर गैर-मुसलमान परिवार के बच्चों को जबरन मुसलमान बनाए जाने की कई शिकायतों के बाद, जबरन धर्म परिवर्तन के खिलाफ एक बिल पास किया था। लेकिन इस बिल के विरोध में कई धार्मिक दल सड़कों पर उतर आए और इसके खिलाफ आंदोलन की घोषणा कर दी थी।

पाकिस्तान के अंग्रेजी अखबार दैनिक डॉन के मुताबिक, पाकिस्तान में सिंध के उमरकोट जिले में जबरन धर्म परिवर्तन की करीब 25 घटनाएं हर महीने होती हैं। जबरन धर्म परिवर्तन की उनकी शिकायतों पर न तो पुलिस कार्रवाई करती है और न वहां की सरकार। यह बात वहां के रहने वाले हिन्दू जानते हैं, लिहाजा वो खुद ही हल्ला मचाकर, रो-धोकर बैठ जाते है।

वर्ष 2012 में अमेरिका के कई प्रभावशाली सांसदों ने पाक के सिंध प्रांत में अल्पसंख्यक हिंदुओं की दुर्दशा पर गहरी चिंता जताई थी। उनका कहना था कि पाकिस्तान के इस प्रांत में हिंदुओं को कोई मौलिक अधिकार नहीं मिला है। पाक मानवाधिकार की स्थिति बदतर है। अमेरिकी संसद में सिंध में मानवाधिकार पर ब्रीफिंग के दौरान एक सांसद ने आरोप लगाए, सिंध का हिंदू समुदाय अपनी औरतों के जबरन इस्लाम में धर्मांतरित करने की लगातार आशंका में जीता है।

सिंध प्रांत में अल्पसंख्यक हिन्दू समुदाय की महिलाओं और लड़कियों का अपहरण और बलात् धर्मान्तरण कराकर जबरदस्ती विवाह कराना एक आम बात हो चुकी है। वर्ष 2012 में हिन्दू लड़की रिंकल कुमारी का मामला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गूंजा था लेकिन उसके बाद भी उसका धर्म परिवर्तन कराकर उसे मुसलमान बनाया गया इसके बाद नावीद शाह नाम के एक मुस्लिम युवक से उसका निकाह करा दिया गया। उस समय रिंकल के वकील अमरलाल ने पत्रकारों के सामने दुःखी मन से कहा था, कि कभी अनिता को बेचा जाता है, कभी जैकबाबाद से कविता को उठाकर ताकत के जोर पर मुसलमान किया जाता है, कभी जैकबाबाद से सपना को उठाते हैं तो कभी

एक गैर सरकारी संस्था मूवमेंट फॉर पीस एंड सॉलिडेरिटी इन पाकिस्तान के अनुसार हर वर्ष करीब 5 सौ से हजार ईसाई और हिंदू लड़कियों का जबरन धर्म परिवर्तन कराया जाता है। इतना ही नहीं उनकी इच्छा के विरुद्ध उनके निकाह मुसलमानों से कराए जाते हैं। वे बताते है कि 12 से 25 साल उम्र की लड़कियों का पहले अपहरण कर लिया जाता है, फिर उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहा जाता है। उसके बाद उसका किसी से निकाह करवा दिया जाता है।

पनो आकिल से पिंकी को ले जाते हैं।

यह कोई एक या दो घटना नहीं है बल्कि ऐसी घटनाएँ पाकिस्तान में रह रहे हर तीसरे हिन्दू परिवार के साथ हो रही हैं। रवीना पाकिस्तान के सकूर में रहती थी और डॉक्टर बनना चाहती थी। इन्टरमीडिएट की परीक्षा में अच्छे अंक लेकर वह शहर के मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए गई। उसे सिर्फ इस वजह से प्रवेश नहीं दिया कि वह हिन्दू है और एडमिशन के लिए उसे धर्म परिवर्तन की सलाह दी गयी।

एक गैर सरकारी संस्था मूवमेंट फॉर पीस एंड सॉलिडेरिटी इन पाकिस्तान के अनुसार हर वर्ष करीब 5 सौ से हजार ईसाई और हिंदू लड़कियों का जबरन धर्म परिवर्तन कराया जाता है। इतना ही नहीं उनकी इच्छा के विरुद्ध उनके निकाह मुसलमानों से कराए जाते हैं। वे बताते है कि 12 से 25 साल उम्र की लड़कियों का पहले अपहरण कर लिया जाता है, फिर उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहा जाता है। उसके बाद उसका किसी से निकाह करवा दिया जाता है। इसमें यह भी दिखाया जाता है की उन्होंने अपनी इच्छा से इस्लाम कबूल किया है। जैसा कि अब रीना और रवीना के मामले में भी एक वीडियो पोस्ट कर दिखाया जा रहा है।

यही नहीं खुद को धार्मिक कहने वाले यहां के मौलवी को लेकर ये भी आरोप लगते रहे हैं कि यहां नाबालिग हिंदू और ईसाई लड़कियों को अगवाकर उनका शारीरिक शोषण करते है फिर धर्म परिवर्तन कराकर उनका निकाह कराते है। इसे लेकर कुछ समय पहले पाकिस्तान तहरीक-ए-इन्साफ के लीडर और सिंध के कंधकोट के डॉ. जसपाल छाबड़िया ने सवाल भी उठाया था। उन्होंने यहां 13 साल की लड़की का अपहरण, जबरन धर्म परिवर्तन और 52 साल से शख्स से निकाह को लेकर सवाल खड़ा किया था।

अब देखना यही है कि इस घटना पर कितनी कारवाही होती है और कितने सवाल खड़े होते है पर इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि सीमा भले ही बदली हो लेकिन मानसिकता में बदलाव दिखाई नहीं दे रहा है। इधर लव जिहाद के नाम पर है तो उधर सीधा ही घर से उठाकर जिहाद के नाम पर धर्मान्तरण। - ***सम्पादक***

Veda Prarthana - II
Rigveda - 31

समानो मन्त्रः समितिः समानि समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभ मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
– *ऋग्वेद – 10/181/3*

Samano mantrah samitih samani samanam manah sahachittmesham. Samanam mantramabhi mantraye vah samanena vo havisha juhomi.
- Rigveda 10/181/3

May We Share Earth's Resources with Equality for Societal Good

- Acharya Gyaneshwarya

There is only one Eeshwar/ God who is the Creator of the whole universe, not two, four, ten or twenty Gods who created the universe. God has created and given us various things of the earth for our use and enjoyment. God creates all living beings and gives them the physical body, various senses, action organs, and the mind. Also, God gives all human beings the same virtuous teachings through the four Vedas. Vedas are for the benefit of all mankind and are not restricted to anybody. In addition, God has given us the sun, moon, oceans, rivers, mountains, forests, trees, grains, fruits and various vegetables for the use of all human beings without any discrimination. Therefore, we all have an equal right to use God created things for our benefit.

Although, we all human beings have equal rights to use and enjoy bounties of earth, yet some selfish, clever, devious and physically or politically powerful persons through lies, deception, cunningness, fraud, fear, violence, injustice and other wrong measures have usurped for their use and enjoyment a much larger share of the earth's resources. Moreover, such persons through measures such as lies, deception etc. described in previous sentence, have been able to subjugate and exploit ordinary simple persons in their societies and nations. Such exploiters, to gather money, wealth, other creature comforts, power, have been willing to perform a variety of evil deeds and criminal ctivities. When one reads about such terrible persons in the history books, it makes one angry as well as feel ashamed that why mankind let such persons even temporarily succeed.

On this earth, on the one hand, a select few persons often by devious methods as described in the above paragraph have managed to gather a much larger share of prosperity. However, on the other hand millions and billions of people on the earth cannot even meet their most basic daily needs of food, clothing, and shelter. Whereas, on one hand, we have a few persons indulging in extreme luxuries and amorous delights, on the other hand for many there is insufficient food to stop hunger pangs, not enough clothing to cover body's nakedness, and not even a small hut to protect from heat, cold or rain. While, the wealthy spend many thousands of rupees for a single child for his/her education, play and security so that when he/she grows up would find a good job and be successful citizen. On the other hand there are children who get no opportunity to attend school.

In the ancient times, before Mahabharata eternal Vedic dharma was the main religion of the world, every person had equal access to earth's resources. The equal access by all people can be re-achieved, if the representatives from all over the world get together amicably, to present and discuss their plans and principles for equality, and be willing to accept those principles and plans which are universally applicable, based on truth and are for the welfare of all. However, this is unlikely to succeed until there is one ruleand one governing body for the whole world.

The world uses a common language, same set of laws and similar justice for all, worship of same one God, and similar system of education. As long as there are dividing boundaries between nations, and all human beings do not think of others as their brothers and sisters, there would not be full peace, happiness, fearlessness, and real freedom. Although, accomplishing equal access to earth's resources for all people is a difficult task, yet it is not impossible. This is the only way to make earth a 'heavenly' place to live full of peace and harmony.

Dear God, with your grace may the world's most wise and learned persons, religious and political leaders, and rulers of nations, get together and make utmost effort to make the whole world one large family where everybody has similar opportunity to make progress in their lives as well as find peace

To Be Continue....

प्रथम पृष्ठ का शेष

उन्होंने यहां के मूलनिवासियों पर आक्रमण किया। इस बात की पुष्टि के कई प्रमाण है कि आर्य भारत के मूलनिवासी थे।"

फिर आगे पेज नं 322 पर लिखते हैं– "शूद्र को आर्य स्वीकार किया था और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी उनको आर्य कहा गया है और शूद्र आर्यों के अभिन्न, जन्मजात और सम्मानित सदस्य थे।" मसलन बाबा साहेब अब शूद्रों को भी आर्य मानते थे।

अगला प्रमाण है उनकी पुस्तक 'शूद्र कौन थे?' इसके पृष्ठ 52 पर बाबा साहेब लिखते है कि जहां तक आर्य जाति के बाहर से आने और यहां के मूलनिवासियों को जीतने का सम्बन्ध है, ऋग्वेद में ऐसा कोई भी प्रसंग नहीं है जो इसकी पुष्टि करता हो। वैदिक साहित्य इस मत के विपरीत है कि आर्य विदेश से आये। ऋग्वेद में आर्य तथा दास और दस्युओं के युद्ध के विषय में कोई विशेष कथा नहीं मिलती।

अगला प्रमाण बाबा साहेब की पुस्तक प्रमाण 'शूद्रों की खोज' से ही लें तो वह लिखते है कि 'शूद्र आर्यजाति के सूर्यवंशी थे। भारतीय आर्यों में शूद्र क्षत्रिय वर्ण के थे। यानि शूद्र पूर्ण क्षत्रिय वर्ण के ही थे।

अब अंबेडकर साहेब जी की माने या मूलनिवासी मंच की? क्योंकि अम्बेडकर जी लिखते है कि आर्य विदेशी नहीं थे और न उन्होंने भारत के मूल निवासियों पर आक्रमण किया। आर्य भारत के मूलनिवासी हैं, उनके भारतीय होने के प्रमाण ऋग्वेद में मिलते हैं और शूद्र भी आर्य जाति के अभिन्न अंग थे। वे क्षत्रिय वर्ण के ही थे।

असल में यूरोप ने हमेशा ही एक दूसरे को लड़ाकर अपनी रोटियाँ सेंकनी चाही हैं। प्राचीन समय से ही उसकी नीतियां बहुत बर्बर रही हैं, अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए मानवता को जहाँ तक नुकसान पहुँचाया जाए उसके लिए कम था। जबकि आर्य इसके विपरीत थे, दूसरों का भला, सांसारिक समृद्धि और मानवता के उत्थान के लिए अच्छे कार्य यही सब उनका लक्ष्य था। इसके फलस्वरूप तभी प्राचीन भारत समृद्ध था क्योंकि आर्य शब्द का तो एक अर्थ ही प्रगतिशील होता है यानि जिस समाज का व्यक्ति प्रगतिशील है वह आर्य है। इसकी कारण आर्यों की व्याख्या करते हुए भगवान बुद्ध ने कहा था कि समस्त प्राणियों की अहिंसा से ही मनुष्य आर्य कहलाता है।

अब इससे आगे बढें तो आज देश बाबा साहेब के बनाए संविधान से चल रहा है किन्तु इसके बावजूद हर एक मुद्दे पर इनके अनुसार – मनुवादी ताकतें भारत को लूट रही हैं, मनुवादी सरकार हम पर अत्याचार कर रही है। ऐसा कहकर यह लोग फिर बाबा साहेब के बनाए संविधान का अपमान करते है क्योंकि जहाँ न्याय की बात होती है, कोर्ट कचहरी में तो बाबा साहब के संविधान की धाराएँ लगती हैं, न कि मनुस्मृति के श्लोक?

यह बात ये लोग या तो समझना ही नहीं चाहते या फिर अपनी कुंठा में जीना चाहते है। निश्चित तौर किसी भी अवधारणा को मानने लिये ठोस प्रमाणों और पूर्ण विवेचन की आवश्यकता होती है। आर्यों के विदेशी होने का सिद्धान्त केवल बाइबिल की कालगणना को आधार बनाकर माना गया और अपनी अप्रमाणित अवधारणा को ही इस प्रकार प्रस्तुत किया गया कि वह भारतीय इतिहास का अनिवार्य अध्याय बन गई है।

इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए वामपंथी इतिहासकारों ने बताया कि हम आर्य हैं। हम बाहर से आए हैं। कहां से आए? इसका कोई सटीक जवाब नहीं है। फिर भी बाहर से आए। आर्य कहां से आए – कोई मध्य एशिया कहता है, तो कोई यूरेशिया, तो कोई मंगोलिया। किसी ने आर्यों को जर्मनी का निवासी बताया, किसी ने कहीं का। आर्य धरती के किस हिस्से के मूल निवासी थे, यह इतिहासकारों के लिए आज भी मिथक है। फिर भी मध्य एक्सिया से लेकर यूरेशिया तक, हर कोई अपने–अपने हिसाब से आर्यों का स्थानीय पता डाकिए की तरह बता देता है।

आखिर कैसे जब ग्रीस, रोम और एथेंस का नामोंनिशां नहीं था, तब यहां के लोग विश्वस्तरीय शहर बनाने में कैसे कामयाब हो गए? टाउन–प्लानिंग का ज्ञान कहां से आया? और उन्होंने स्वीमिंग पूल बनाने की तकनीक कैसे सीखी? जबकि इसके उलट यूरोप और मध्य एशिया लोग पिछले 400 वर्षों तक कबीलों में रहते थे। क्या जब वहां से आर्य आये तो वह व्यावहारिक धार्मिक सामाजिक और वैज्ञानिक ज्ञान भी लेकर आ गये थे? तो क्या उनकी बुद्धि और ज्ञान सब खत्म हो गया। वे शहर बनाना भूल गए, स्वीमिंग पूल बनाना भूल गए, नालियां बनाना भूल गए। क्या वहां एक आर्य भी नहीं बचा था? इस बात का जवाब कौन देगा? क्या इतिहासकार मूलनिवासी मंच के नाम पर अलगाव फैलाने वाले इसका जवाब देंगे?

– राजीव चौधरी

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सोमवार 25 मार्च, 2019 से रविवार 31 मार्च, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28-29 मार्च, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 मार्च, 2019

ओ३म्
thearyasamaj.org

एक करोड़ तरेपन लाख
लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और
अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना
चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन,
सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड
कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

देश और समाज विभाजन के
षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

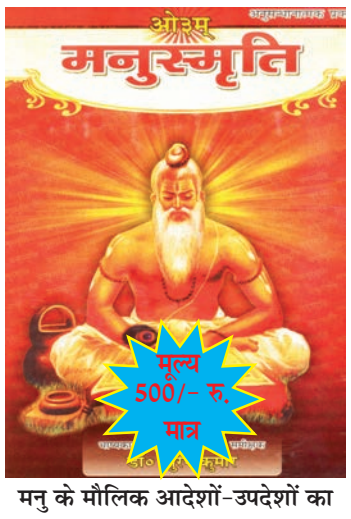

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का
प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील
महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600/-~~ 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

आओ जानें ! सत्य? असत्य?
आओ पढ़ें !
सत्यार्थ प्रकाश

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से
17वां आर्य परिवार
होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न
विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी आगामी अंकों में

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **मंगलवार 26 मार्च, 2019** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 4:00 बजे** से सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। बैठक में अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई तथा काशी शास्त्रार्थ के 150 वर्ष पूर्ण होने पर अक्तूबर-2019 में विशाल आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। पद्मभूषण आर्य रत्न महाशय धर्मपाल जी विशेष रूप से उपस्थित होकर सभी सदस्यों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

- प्रकाश आर्य, सभामन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की
हकीकत जानिये
कहानी उन्हीं की जुबानी

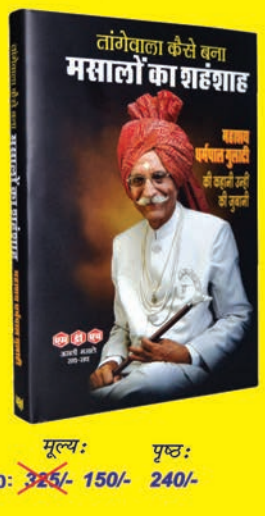

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक
एक तांगा चलाने वाला
कैसे बना मसालों का शहंशाह

इनके जीवन को
नई दिशा दिखाने वाले
सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक
अध्याय आपके जीवन
को नई दिशा प्रदान
कर सकता है।

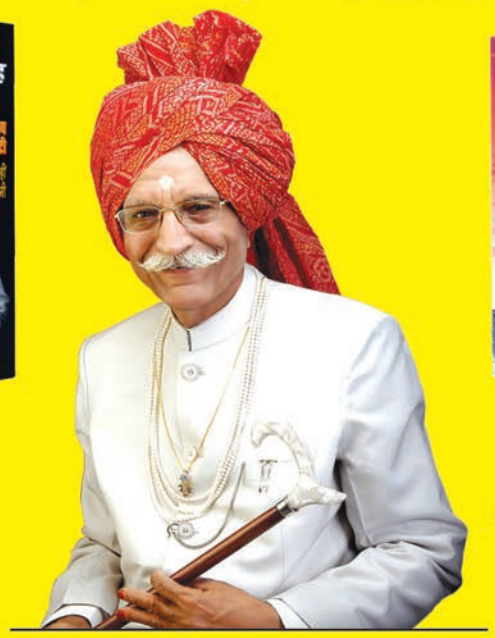

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

"मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है
वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।
आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें।
आपके पत्र की प्रतीक्षा में"

महाशय धर्मपाल

MDH असली मसाले सच-सच

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृप्या लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह